कछुआ और द्वीप

पापुआ न्यू-गिनी की लोककथा

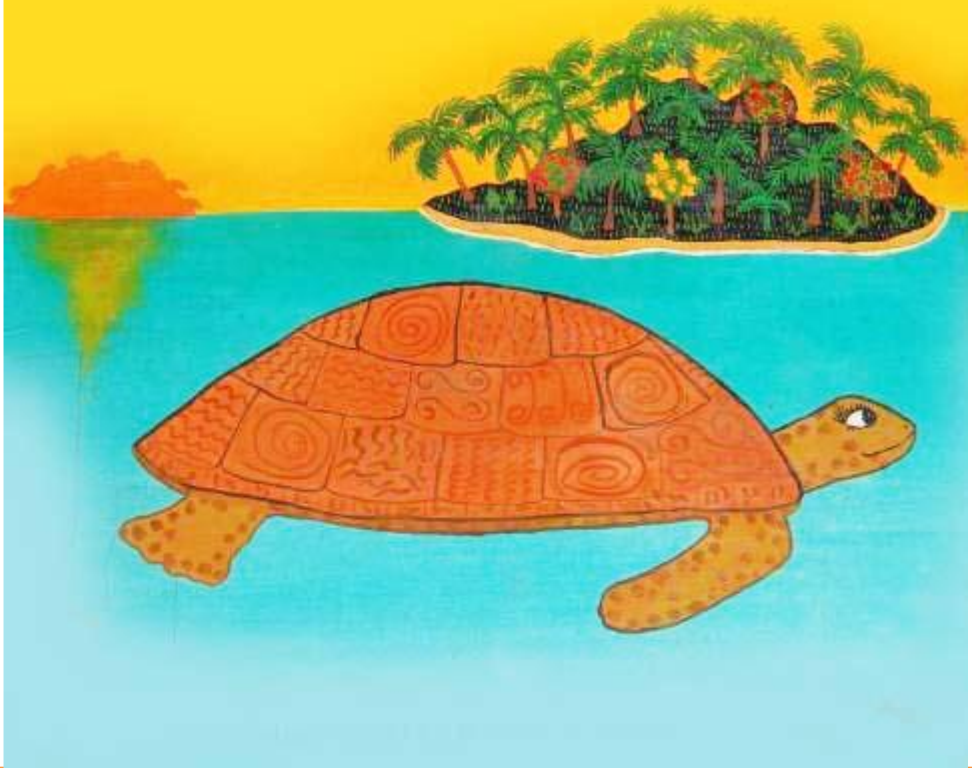

कछुआ और द्वीप

पापुआ न्यू-गिनी की लोककथा

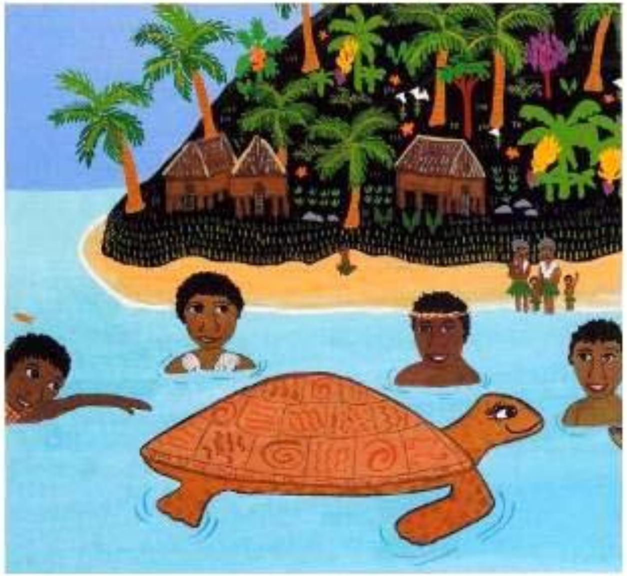

बहुत-बहुत वर्ष पहले जब कछुओं के भी दाँत हुआ करते थे, समुद्र में एक विशाल कछुआ रहता था. वह संसार का सबसे बड़ा कछुआ था और अपना अधिक समय वह उस विशाल सागर में तैर कर बिताता था जिसे आजकल लोग प्रशांत महासागर कहते हैं.

वह धीरे-धीरे तैरता रहता था और सागर में रहने वाली मछलियाँ और पानी में उगने वाले पौधे और सागर के किनारे पाई जाने चट्टानों में छिपे हुए घोंघे खाता था. वह विशाल सागर के एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरता रहता था.

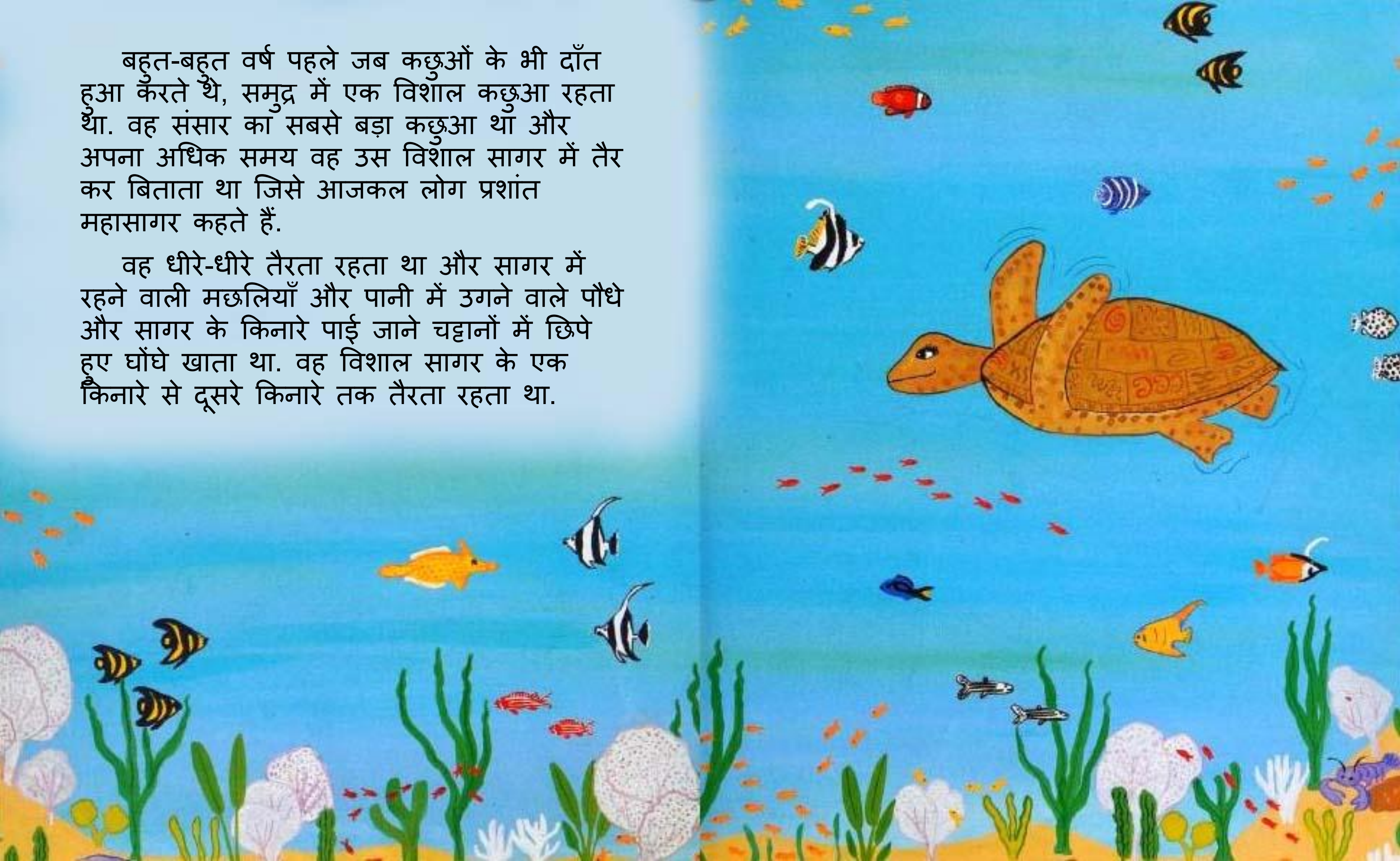

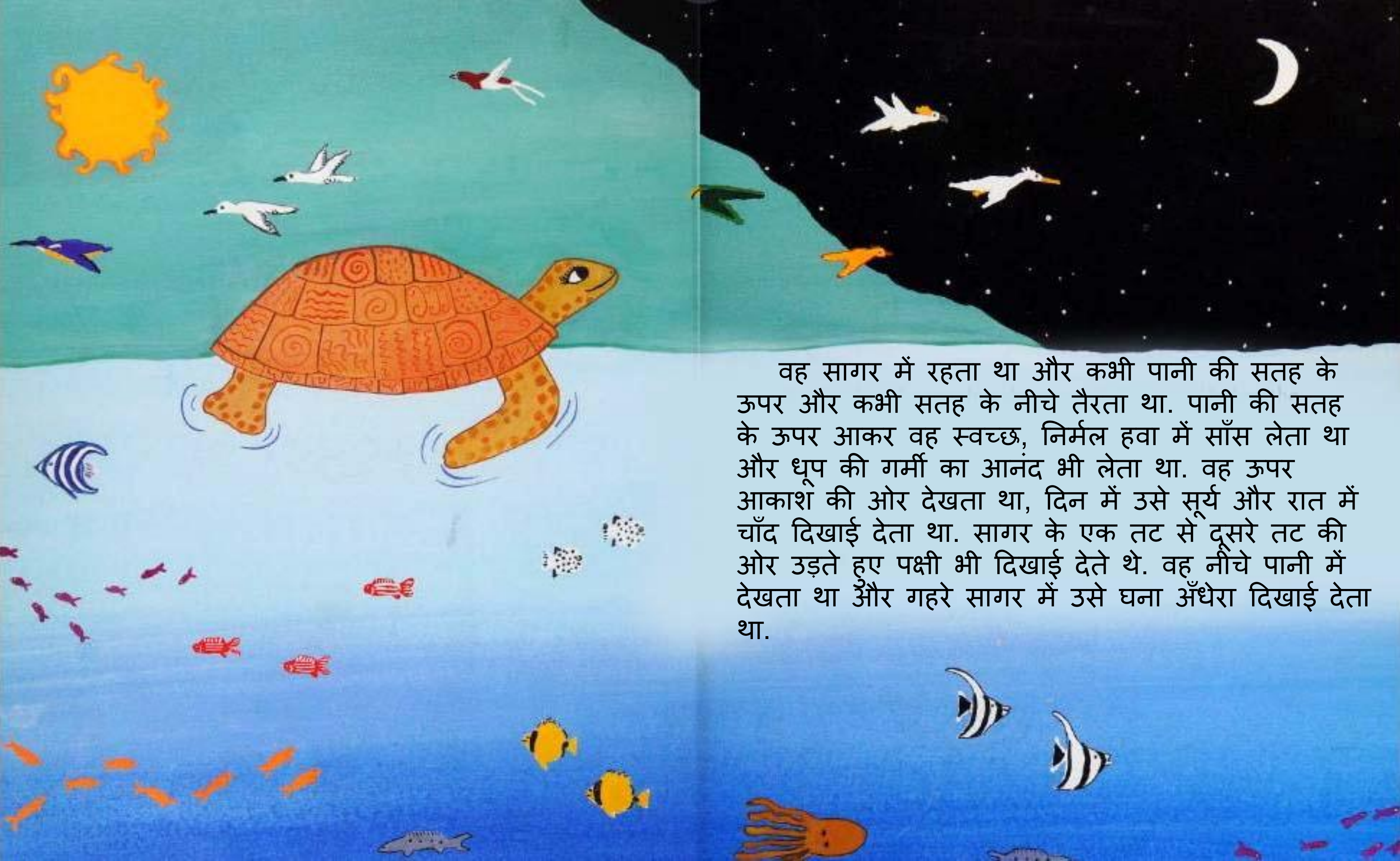

वह सागर में रहता था और कभी पानी की सतह के ऊपर और कभी सतह के नीचे तैरता था. पानी की सतह के ऊपर आकर वह स्वच्छ, निर्मल हवा में साँस लेता था और धूप की गर्मी का आनंद भी लेता था. वह ऊपर आकाश की ओर देखता था, दिन में उसे सूर्य और रात में चाँद दिखाई देता था. सागर के एक तट से दूसरे तट की ओर उड़ते हुए पक्षी भी दिखाई देते थे. वह नीचे पानी में देखता था और गहरे सागर में उसे घना अँधेरा दिखाई देता था.

कभी-कभी कछुआ तैर कर थक जाता था और पानी की सतह के नीचे आराम करने लगता था. पर उसका मन चाहता कि वह कहीं धूप की गर्मी में बैठ कर आराम करे. वह सोचता कि कितना अच्छा होता अगर विशाल सागर के बीच में भूमि का एक टुकड़ा होता जहाँ पर बैठ कर वह आराम कर पाता.

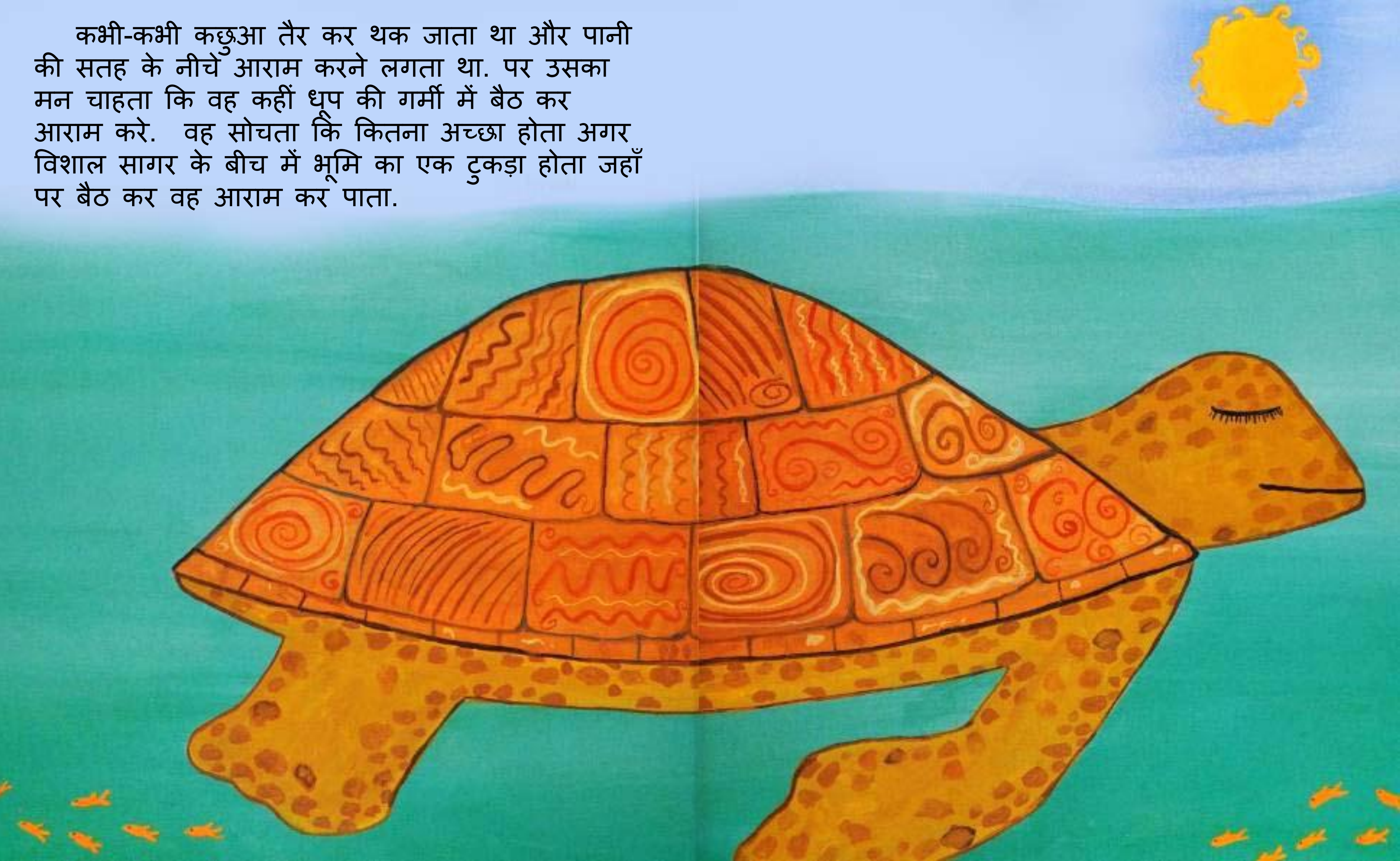

सागर के अंदर बहुत नीचे जहाँ कछुआ तैर कर जाया करता था, एक छिपी हुई गुफा में एक मनुष्य रहता था उस विशाल सागर में वह एक अकेला आदमी था. उसकी न कोई पत्नी थी, न बच्चे, न कुटुम्बी. सागर के नीचे उस गुफा में वह बिलकुल अकेला था. समय बीतने के साथ, अकेलापन उसे बहुत भारी लगने लगा था. अकेलेपन से वह घबराने लगा था.

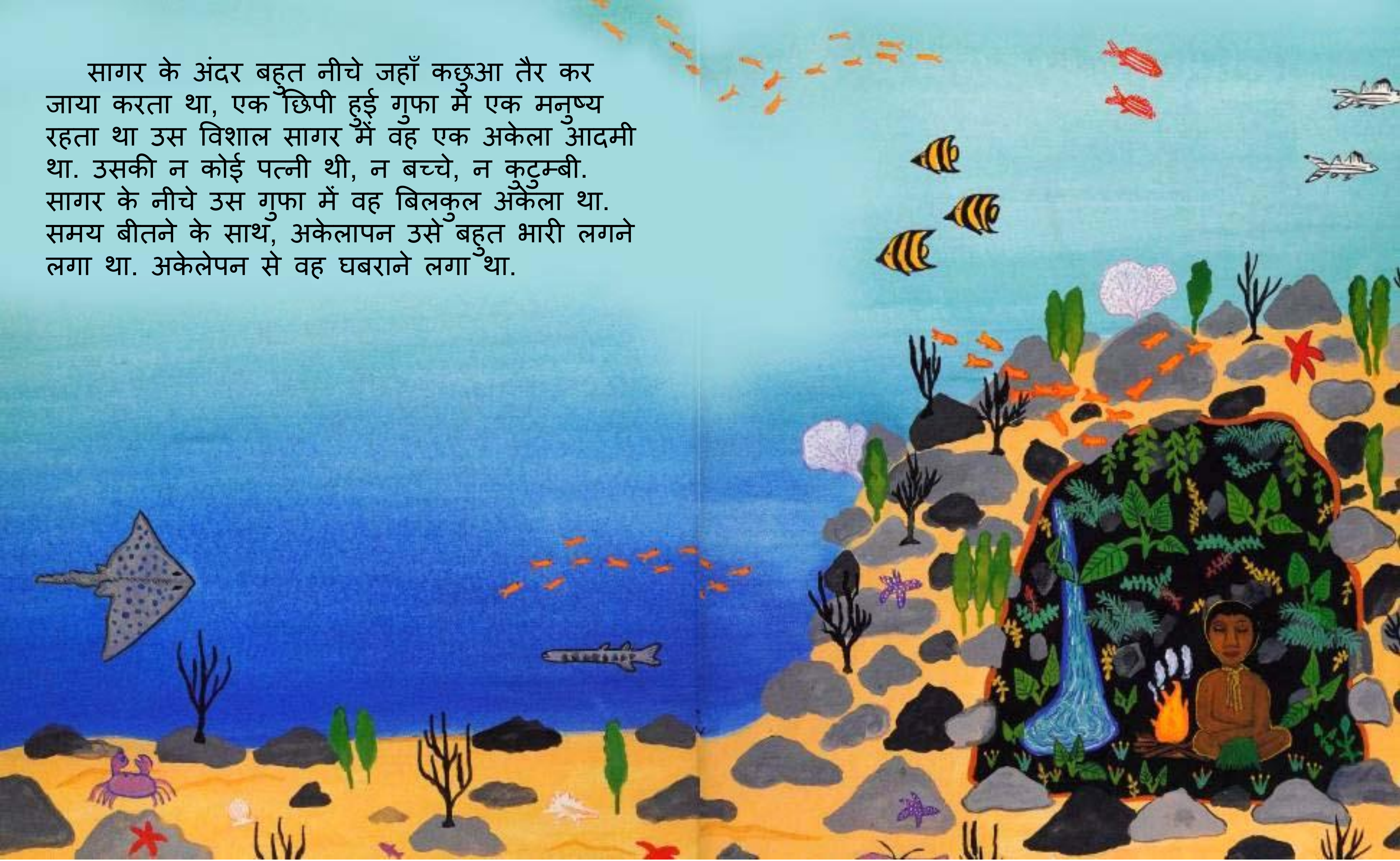

एक दिन जब कछुआ पानी में तैर रहा था, वह सागर के बीच में पहुँच गया. वहाँ उसने सागर के अंदर रेत का एक पहाड़ देखा जो इतना ऊँचा था कि लगभग पानी की सतह तक उठा हुआ था.

“अगर मैं थोड़ी रेत और थोड़े पत्थर ला कर इस पहाड़ी पर डाल दूँ तो शीघ्र ही यह पानी की सतह से ऊपर आ जायेगी.” कछुए ने सोचा. “दिन में इस पर सूरज चमकेगा. यह ऐसी जगह बन जायेगी जहाँ, तैरते-तैरते थकने पर, मैं आराम कर सकूँगा और गर्म धूप का आनंद ले सकूँगा.”

कछुआ सागर के दूसरे भाग में सागर-तल पर गया, वहाँ उसने रेत और पत्थर खोद डाले और उन्हें उठा कर पहाड़ी पर ले आया और उस पर डाल दिये. पहाड़ी ऊँची, और ऊँची होती गई. उसने यह काम इतनी बार किया कि गिनती नहीं की जा सकती. सूर्य उदय होता और अस्त होता, दिन-प्रतिदिन चाँद बढ़ता और घटता, और वह पहाड़ी ऊँची होती गई, ऊँची होती गई. और आखिरकार एक दिन सागर के बीच में पहाड़ी एक बड़ा द्वीप बन गई और कछुआ समझ गया कि उसका काम समाप्त हो गया था.

फिर जो पक्षी सागर के एक तट से दूसरे तट तक उड़ कर जाते थे, उन्होंने पेड़ों और पौधों के बीज लाये और उन्हें उस द्वीप पर गिरा दिया. द्वीप पर घास और फूलों वाले पौधे और ऊँचे पेड़ उग आये और सारे पत्थरों और सारी रेत हरियाली से ढक गई. यह एक सुंदर द्वीप था जहाँ की भूमि उपजाऊ थी और आसपास के समुद्र में ढेरों छोटी-बड़ी मछलियाँ थीं.

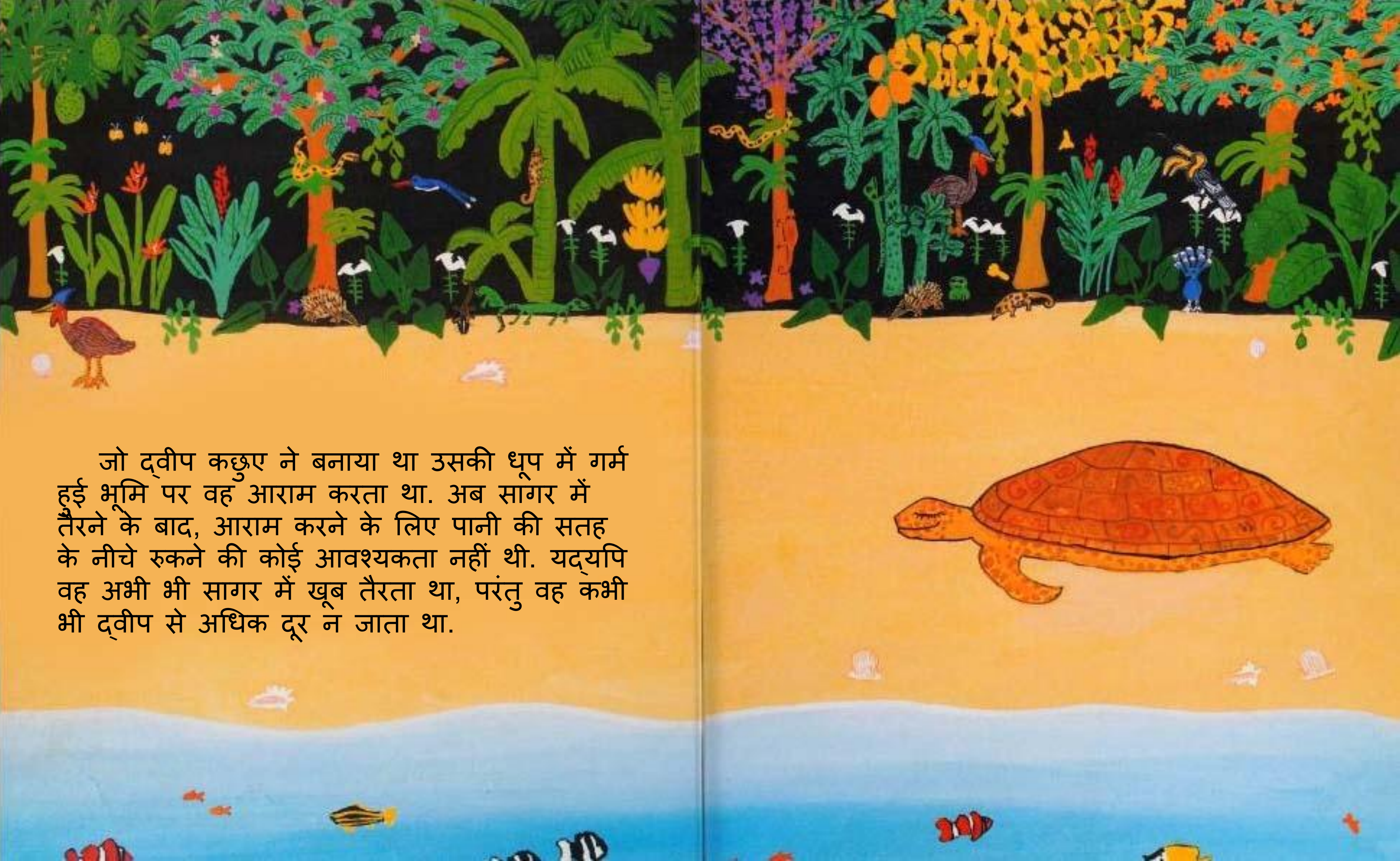

जो द्वीप कछुए ने बनाया था उसकी धूप में गर्म हुई भूमि पर वह आराम करता था. अब सागर में तैरने के बाद, आराम करने के लिए पानी की सतह के नीचे रुकने की कोई आवश्यकता नहीं थी. यद्यपि वह अभी भी सागर में खूब तैरता था, परंतु वह कभी भी द्वीप से अधिक दूर न जाता था.

एक दिन कछुआ सागर में नीचे, बहुत नीचे चला गया. वह उतनी गहराई तक तैर कर चला गया जितनी गहराई तक वह कभी न गया था. सूर्य के प्रकाश और गर्मी से दूर, वहाँ कितनी ठंड थी और कितना अँधेरा था!

अचानक कछुआ उस छिपी हुई गुफा के अंदर चला गया जहाँ आदमी लंबे समय से अकेला रह रहा था. कछुए को देख कर आदमी बहुत प्रसन्न हुआ; उसने कछुए से कहा कि वह उसके लिए एक पत्नी ढूँढ़े, जिसके साथ वह अपना जीवन बिताये और उनके अपने बच्चे हों. आदमी के अकेलेपन पर कछुए को तरस आया. अपनी पीठ पर बैठा कर वह आदमी को उस द्वीप पर ले आया जो उसने बनाया था.

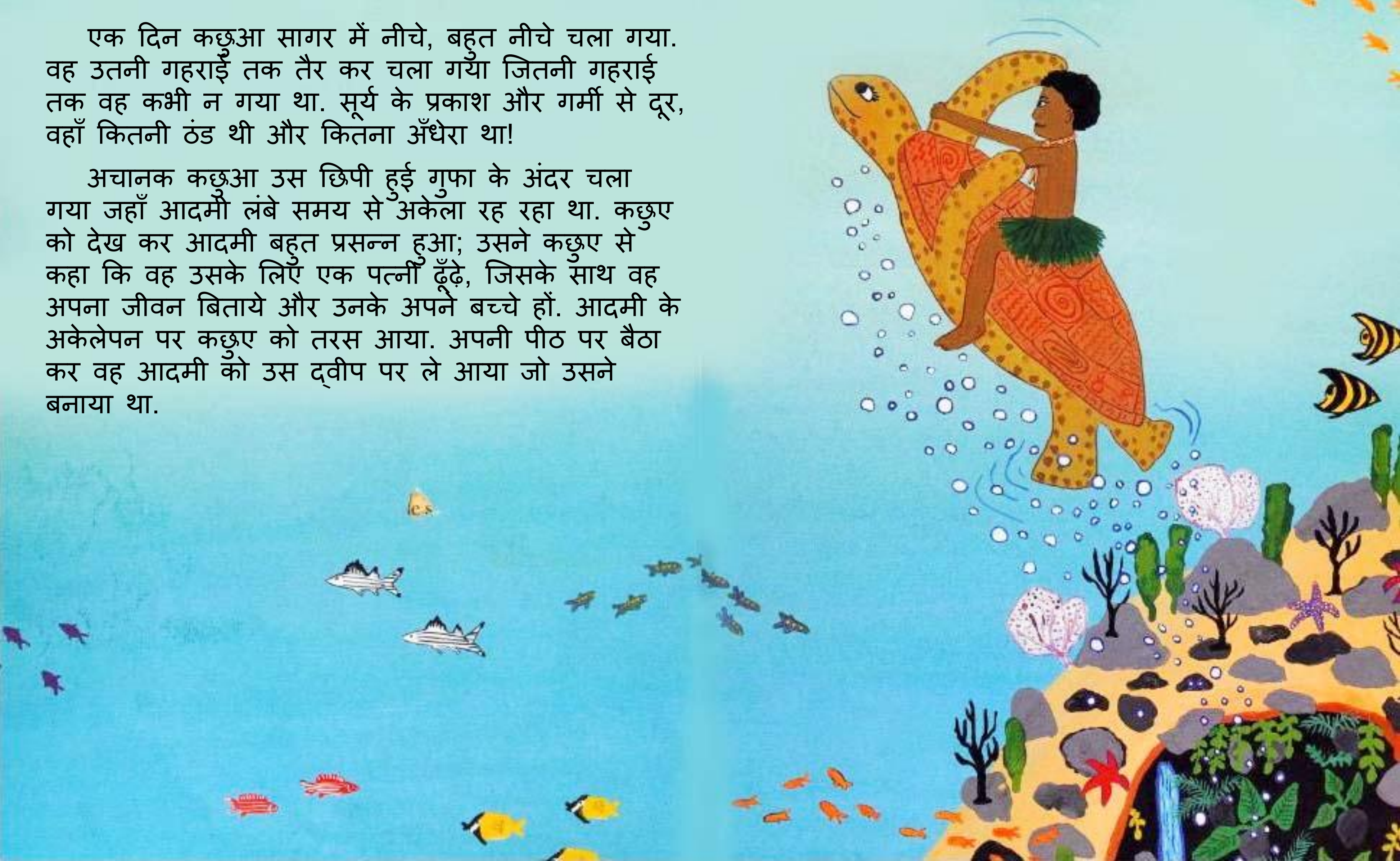

फिर सागर में तैर कर वह सबसे पास वाले किनारे पर आ गया, वहाँ एक औरत खड़ी थी, वह बहुत सुंदर थी. वह रो रही थी, उस मनुष्य की भांति वह भी बिलकुल अकेली थी. उसके मन में पति और बच्चे पाने की तीव्र इच्छा थी. तो कछुआ उसे अपनी पीठ पर बिठा कर सागर के बीच अपने द्वीप पर, उस आदमी की पत्नी बनाने के लिए ले आया.

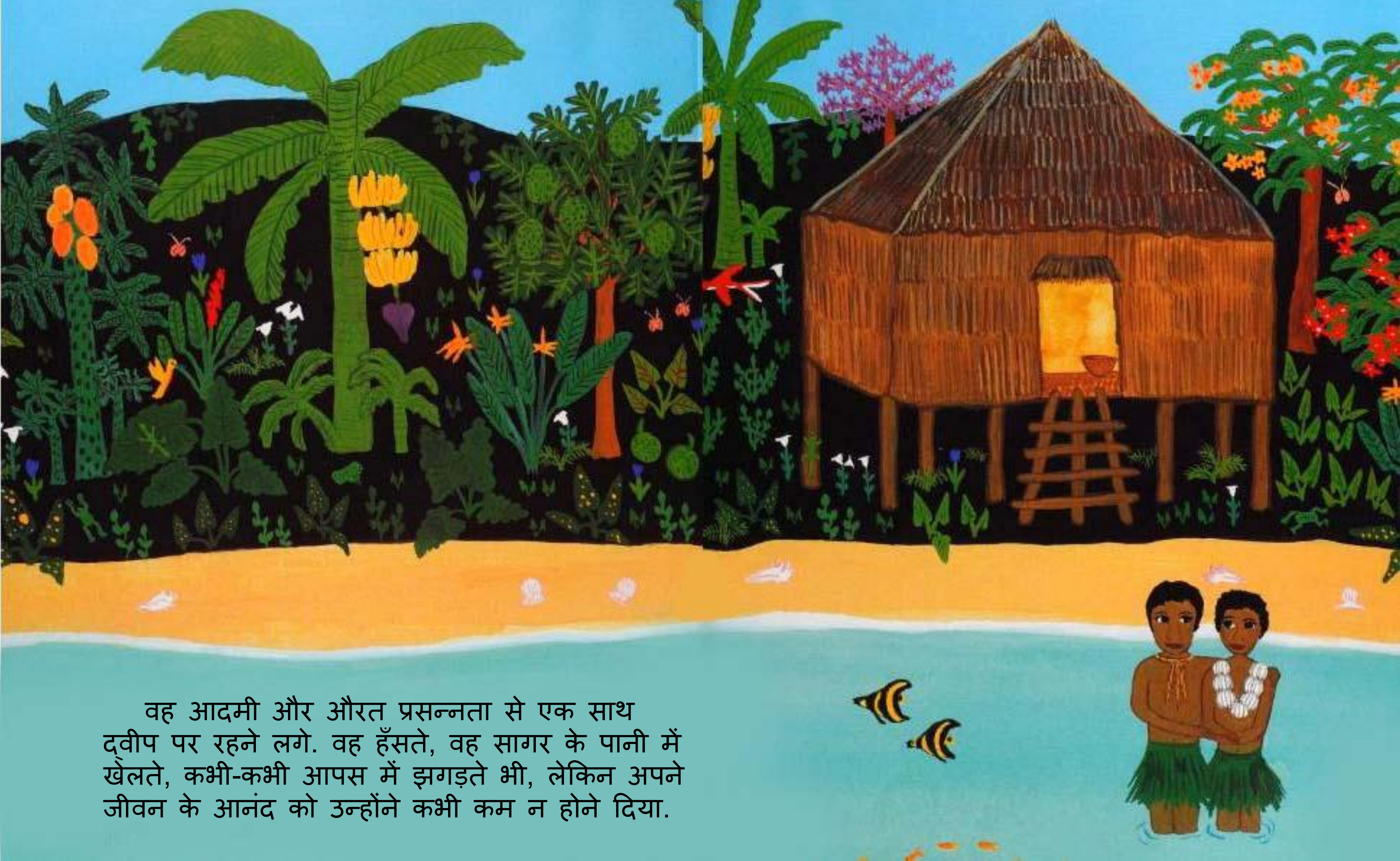

वह आदमी और औरत प्रसन्नता से एक साथ द्वीप पर रहने लगे. वह हँसते, वह सागर के पानी में खेलते, कभी-कभी आपस में झगड़ते भी, लेकिन अपने जीवन के आनंद को उन्होंने कभी कम न होने दिया.

उनके बच्चे हुए, सुंदर बच्चे, और उन बच्चों के भी बच्चे हुए और इस तरह वह द्वीप लोगों से भर गया. वह खेती करने लगे, उन्होंने घर बनाये और सागर के किनारे वह मछलियाँ पकड़ते.

और समय बीतने के साथ जो द्वीप उस विशाल कछुए ने बनाया था, वह न्यू गिनी के नाम से जाना जाने लगा.

समाप्त